अध्याय 24

अय्यूब का उत्तर
(भाग 2)

अध्याय 24 में अय्यूब ने एक तरफ़ा दुष्टता पर ध्यान दिलाया। कुछ लोग इस अध्याय के कुछ भागों को ''सोपर का गुम हुआ भाषण''[1] में बदल देंगे। परन्तु अय्यूब के प्रमाणिक भाषण के रूप में अध्याय के किसी भी बात को नकारने का कोई ठोस कारण नहीं है।[2]

''लगता है कि परमेश्वर गलतियों को नज़रअंदाज़ कर देता है''
(24:1-12)

[1]**''सर्वशक्तिमान ने समय क्यों नहीं ठहराया, और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं वे उसके दिन क्यों देखने नहीं पाते? [2]कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते, और भेड़ बकरियाँ छीनकर चराते हैं। [3]वे अनाथों का गदहा हाँक ले जाते, और विधवा का बैल बन्धक रखते हैं। [4]वे दरिद्र लोगों को मार्ग से हटा देते, और देश के दीनों को इकट्ठे छिपना पड़ता है। [5]देखो, वे जंगली गदहों के समान अपने काम को और कुछ भोजन यत्न से ढूँढ़ने को निकल जाते हैं; उनके बाल-बच्चों का भोजन उनको जंगल से मिलता है। [6]उनको खेत में चारा काटना, और दुष्टों की बची बचाई दाख बटोरना पड़ता है। [7]रात को उन्हें बिना वस्त्र नंगे पड़े रहना, और जाड़े के समय बिना ओढ़े पड़े रहना पड़ता है। [8]वे पहाड़ों पर की वर्षा से भीगे रहते, और शरण न पाकर चट्टान से लिपट जाते हैं। [9]कुछ लोग अनाथ बालक को माँ की छाती पर से छीन लेते हैं, और दीन लोगों से बन्धक लेते हैं। [10]जिस से वे बिना वस्त्र नंगे फिरते हैं; और भूख के मारे, पूलियाँ ढोते हैं। [11]वे उनकी दीवारों के भीतर तेल पेरते और उनके कुण्डों में दाख रौंदते हुए भी प्यासे रहते हैं। [12]वे बड़े नगर में कराहते हैं, और घायल किए हुओं का जी दोहाई देता है; परन्तु परमेश्वर मूर्खता का हिसाब नहीं लेता।''**

आयत 1. परमेश्वर के **समय** और **दिन** न्याय करने के उसके कामों को कहा गया है। **जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं**, अर्थात जो वफ़ादारी से उसकी मानते हैं, उन्होंने हर बात में दुष्टों के न्याय पर ध्यान नहीं दिया; इनमें से कई कुकर्मी जीवन भर सफ़ल होते हुए लगे। उनके लिए जो इस बात से अनजान थे कि सारा न्याय इसी जीवन में नहीं होता, यह बड़ी जटिल समस्या थी। स्पष्टतया अय्यूब को मालूम नहीं था कि ''अवश्य है, कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उस ने देह के द्वारा किया हों पाए'' (2 कुरिन्थियों 5:10)।

आयत 2. ''कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते, और भेड़ बकरियाँ छीनकर चराते हैं।'' यह आयत निर्धनों और असहाय लोगों के विरुद्ध दुष्ट लोगों के किए जाने वाले कामों का

वर्णन करती है। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, ''पहले दो पाप गडरियों की संस्कृति को दर्शाते हैं जिसमें से अय्यूब निकला था।''[3]

''भूमि की सीमा'' मलकीयत दिखाने के लिए खेतों या सम्पत्ति के चारों ओर लगाए गए पत्थरों की हद होती थी। पुराने नियम में उन्हें हटाने को गलत ठहराया गया था: ''जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तुझ को देता है, उसका जो भाग तुझे मिलेगा, उस में किसी का सिवाना जिसे अगले लोगों ने ठहराया हो न हटाना'' (व्यवस्थाविवरण 19:14); और '''शापित हो वह जो किसी दूसरे के सिवाने को हटाए''' (व्यवस्थाविवरण 27:17)।

ऐसे परिवार के लिए जो केवल उनके दूध, मांस, ऊन और खाल पर ही निर्भर हो, ''भेड़ बकरियां छीन'' लिया जाना विनाशकारी ही होना था। यह पाप पिछले पाप से जुड़ा हुआ हो सकता है। जॉन ई. हार्टले ने समझाया है, ''दुष्ट जन शायद इतने सनकी हैं कि वे चुराई हुई भेड़ बकरियों को उसी खेत में चराने का साहस करते हैं जिसे उन्होंने पत्थरों की सीमा तोड़कर हासिल किया है।''[4]

आयत 3. ''वे अनाथों का गदहा हाँक ले जाते, और विधवा का बैल बन्धक रखते हैं।'' विलियम बी. रेबर्न ने कहा है, ''क्रिया शब्द ['हांक ले जाते'] झुंड या भेड़ बकरियों को चोरी करने के बाद उन्हें दूर ले जाने को कहा गया है। इन पशुओं को केवल उससे छुटकारा पाने के लिए ही नहीं हांका जाता था, बल्कि उसे चोरी की गई सम्पत्ति के रूप में लिया जाता था।''[5] ''अनाथों का गधा'' चुराने और ''विधवा का बैल बंधक'' रखने का अर्थ उनके पास आने जाने या भारी काम करने का कोई साधन न रहने देना है। होमेर हेली ने टिप्पणी की है: ''ऐसे कार्यों से असहाय लोगों के प्रति बेरहमी वाला रवैया दिखाई देता था।''[6] किसी के रोज़गार से सम्बन्धित किसी आवश्यक चीज़ को कर्ज़ के लिए ''बंधक'' बना देना अन्यायपूर्ण कार्य ही था (व्यवस्थाविवरण 24:6)।

आयतें 4-8. इन आयतों में अय्यूब अपना ध्यान दुष्ट दमनकारियों से उनसे प्रताड़ित **दरिद्र लोगों** और **दीनों** की दु:ख अवस्था की ओर ले गया। उनका जीवित रहना लगभग निराशा भरा ही था। बिना खतरे के **मार्ग** पर से जाना उनके लिए सुरक्षित नहीं था (देखें न्यायियों 5:6)। एक ओर जहां उनके सताने वालों का जीवन विलासिता में बीतता था वहीं निर्धन लोगों को **छिपना पड़ता** था (देखें नीतिवचन 28:28)।

जंगली गदहों के समान (39:5-8), उन्हें **भोजन** (*terep, टेरेप*) के लिए इधर-उधर घूमना पड़ता था। यह शब्द आम तौर पर जंगली जानवरों के लिए ''अहेर'' या शिकार के लिए इस्तेमाल होता है (4:11; 29:17; 38:39)। वे अपने **बाल बच्चों** को खिलाने के लिए **भोजन** ढूंढ़ते थे। वे **खेत में चारा काट** कर और **दुष्टों की बची बचाई दाख बटोर** कर जीवित रहते थे (देखें लैव्यव्यवस्था 19:9, 10; व्यवस्थाविवरण 24:21; रूत 2)।

दरिद्र लोगों और दीनों को **रात को बिना वस्त्र नंगे पड़े रहना** पड़ता था। शायद उनके वस्त्र गिरवी रख लिए गए होते थे और लौटाए नहीं जाते थे (निर्गमन 22:26, 27; व्यवस्थाविवरण 24:12, 13, 17; अय्यूब 22:6)। उनके पास **पहाड़ों ... की वर्षा** से बचने के लिए उपयुक्त **शरण** ही नहीं होती थी, क्योंकि वे पहाड़ों की **चट्टानों** में रहते थे।

आयतें 9-12. अय्यूब ने देश में और **नगर में** होने वाले **दीन लोगों** के उत्पीड़न का विवरण जारी रखा। दुष्ट लोग इतने खराब थे कि वे **अनाथ बालक को मां की छाती पर से छीन**

लेते थे! यहां ''अनाथ'' (*yathom, यादोम*) शब्द का इस्तेमाल उसके लिए किया गया है जो ''पिताहीन'' था (KJV; NIV; NJPSV)। उस नवजात शिशु की माता जो अब विधवा थी, अभी जीवित थी और वह उसका पालन-पोषण करती थी। दुष्ट लोग ऐसे पिताहीन बालकों को गुलाम बनाने के लिए मां से छीन लेते थे (देखें TEV)।

खेतों और दाख की बारियों में बटोरने के साथ-साथ दरिद्र लोग **तेल** और **दाखरस** निकालने के लिए कड़ी मेहनत करते थे। उनके कड़े परिश्रम के बावजूद उन्हें उपयुक्त भोजन नहीं मिलता था और वे **नंगे** और प्यासे रहते थे। हार्टले ने लिखा है, ''किसी मज़दूर को कुछ भोजन दिए बिना या उसे उसकी मेहनत के आनन्दमय भाग दिए बिना उसके बल को निर्बल करना मज़दूरी के अमानवीय व्यवहारों की हद थी'' (तुलना याकूब 5:1-6)।''[7]

''परन्तु परमेश्वर मूर्खता का हिसाब नहीं लेता।'' क्या अय्यूब यह कह रहा था कि अय्यूब को सामाजिक अन्यायों की कोई परवाह नहीं थी या वह उसी की ओर ध्यान दिला रहा था जो उसने असहाय और निराश लोगों की दशा के सम्बन्ध में देखा था?

''अंधेरा बुराइयों को छुपा लेता है'' (24:13-17)

[13]''कुछ लोग उजियाले से बैर रखते, वे उसके मार्गों को नहीं पहचानते, और न उसके मार्गों में बने रहते हैं। [14]हत्यारा पौ फटते ही उठकर दीन दरिद्र मनुष्य को घात करता, और रात को चोर बन जाता है। [15]व्यभिचारी यह सोचकर कि कोई मुझ को देखने न पाए, दिन डूबने की राह देखता रहता है, और वह अपना मुँह छिपाए भी रखता है। [16]वे अन्धियारे के समय घरों में सेंध मारते और दिन को छिपे रहते हैं; वे उजियाले को जानते भी नहीं। [17]इसलिये उन सभों को भोर का प्रकाश घोर अन्धकार सा जान पड़ता है, क्योंकि घोर अन्धकार के भय से वे मित्रता रखते हैं।''

यहां पर अय्यूब ने एक अलग प्रकार की बुराई करने वालों अर्थात हत्यारों, व्यभिचारियों और चोरों की बात की। ये लोग वे हैं जो अपने बुरे काम अंधेरे में करते हैं।

आयत 13. कुछ लोग उजियाले से बैर रखते, वे लोग हैं जो प्रकाश से घृणा करते, उसे नकारते या उससे दूर रहते हैं। ''उजियाले'' को अक्षरश: और लाक्षणिक रूप में दोनों से समझा जा सकता है। पौलुस ने मसीही लोगों से ''अंधकार के कामों को त्यागकर ज्योति के हथियार बांध'' लेने का आग्रह किया (रोमियों 13:12)। यीशु ने कहा, ''दण्ड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उनके काम बुरे थे'' (यूहन्ना 3:19)।

आयतें 14-16. इन आयतों में **हत्यारा**, **चोर** और **व्यभिचारी** जैसे विद्रोहियों की पहचान कराई गई है। उनके अपराध वही हैं जिनकी निर्गमन 20:13-15 में दस आज्ञाओं में निंदा की गई है (देखें यिर्मयाह 7:9; होशे 4:2)।

स्पष्टतया बुराई करने वाले ये सब लोग **अंधियारे के समय** काम करते हैं ताकि कोई उन्हें देख न पाए। हत्यारा अपने शिकार पर **पौ फटते** ही हमला करता है, शायद तब जब ''कोई किसी को पहचान सके'' (रूत 3:14)। व्यभिचारी व्यक्ति **दिन डूबने** पर चुपके से जाता है

(नीतिवचन 7:9)। चोर **रात को** चोरी करने जाता है (मत्ती 24:43; 1 थिस्सलुनीकियों 5:2)। बुराई करने वाले ये सब लोग अपनी बुराई रात के समय ही करते हैं। इसलिए ये दिन के समय अपने आपको छुपा लेते हैं।

पीछे की दीवार में से अंदर जाने के लिए **घरों में सेंध** मारना, जहां से वे दिखाई न दें, चोरों का आम तरीका होता था (निर्गमन 22:2; यिर्मयाह 2:34; मत्ती 6:19; देखें यहेजकेल 8:8; 12:5, 7, 12)। दीवारें आम तौर पर गारे की बनी हुई होती थीं जिस कारण उन्हें तोड़कर उनमें से निकलना आसान होता था।

आयत 17. परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों के उलट दुष्ट व्यक्ति को रात के समय काम करना आसान लगता है। वह **घोर अंधकार के भय** से अच्छी तरह परिचित थे। परन्तु वह उजाले से इसलिए डरता है क्योंकि उसके बुरे कामों का भेद खुल जाएगा (देखें इफिसियों 5:11)। दुष्ट जन के मूल्य उलटे हैं (देखें यशायाह 5:20; मत्ती 6:22, 23)।

''दुष्ट लोग वृक्ष की तरह तोड़ दिए जाएंगे'' (24:18-25)

वक्ता की पहचान के सम्बन्ध में टीकाकारों के 24:18-25 पर अलग-अलग विचार हैं। मेरविन एच. पोप ने इस आयतों को सोपर से जोड़ा है,[8] जैसा TEV और NJB में भी है। अन्यों ने इन्हें बिलदद के साथ जोड़ा है (NAB)। परन्तु फ्रांसिस आई. एंडरसन ने कहा,

> जल्दबाजी में हमें इन शब्दों को अय्यूब के होठों से हटा नहीं देना चाहिए। केवल इसलिए कि वे वैसे नहीं लगते जैसा हमें लगता है कि वह कहे। ... वचनों की खासियत की समस्याओं से कठिनाइयां तो हैं पर हम यह नहीं मानते कि अय्यूब ने ये शब्द नहीं कहे हो सकते। अय्यूब ने यह कभी नहीं माना कि दुष्टों का अंत एलीपज (5:2-7; 15:17-35), बिलदद (8:8-19; 18:5-21) और सोपर (20:4-29) द्वारा बताए गए बुरे अंत वाला होता है।[9]

हार्टले द्वारा इस वचन की प्रशंसनीय व्याख्या दी गई थी: ''क्योंकि इस प्रमाण के रूप में कि वह अपने ही पक्ष में न्यायपूर्वक काम करेगा, अय्यूब की इच्छा थी कि परमेश्वर इन दुष्टों के विरुद्ध अपना न्याय निष्पादित करे, वह नियम को न मानने वालों के विरुद्ध एक के बाद एक श्राप दे देता है।''[10] इस व्याख्या को NJPSV का समर्थन है जिसका आरम्भ मज़बूत इच्छा का संकेत देते हुए इस पद्य की कई पंक्तियों का आरम्भ क्रिया शब्द ''may'' के साथ होता है।

दण्ड लगाने वाले न्याय का अय्यूब का विचार उसके मित्रों के विचार वाला ही था। अगली आयतों में इस बात को मानते हुए, उसने ''उनके कही मन की बात कह'' दी। अय्यूब की बातों से इस बात का संकेत मिलता है कि दुष्टों के विपरीत अय्यूब अपने मामले के सम्बन्ध में खुद मित्रों की तरह खुद भी उलझन में है।

[18]''वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के सरीखे हैं, उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले कोसते हैं, और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते। [19]जैसे सूखे और धूप से हिम का जल सूख जाता है वैसे ही पापी लोग अधोलोक में सूख जाते हैं। [20]माता भी उसको

भूल जाती, और कीड़े उसे चूसते हैं, भविष्य में उसका स्मरण न रहेगा; इस रीति टेढ़ा काम करनेवाला वृक्ष के समान कट जाता है। [21]वह बाँझ स्त्री को जो कभी नहीं जनी लूटता, और विधवा से भलाई करना नहीं चाहता है। [22]बलात्कारियों को भी परमेश्वर अपनी शक्ति से खींच लेता है, जो जीवित रहने की आशा नहीं रखता, वह भी फिर उठ बैठता है। [23]वह उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है, कि वे सम्भले रहते हैं; और उसकी कृपादृष्टि उनकी चाल पर लगी रहती है। [24]वे थोड़ी देर के लिये बढ़ते हैं, तब जाते रहते हैं, वे दबाए जाते और सभों के समान रख लिये जाते हैं, और अनाज की बाल के समान काटे जाते हैं। [25]क्या यह सब सच नहीं! कौन मुझे झुठलाएगा? कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा?''

आयत 18. इस आयत की कठिनाई विभिन्न संस्करणों में दिए गए अलग-अलग अनुवादों से दिखाई देती है।

''**वे जल के ऊपर हलकी वस्तु के सरीखे हैं।**'' पिछले पद्य से अय्यूब बुराई करने वालों का अनुवाद कर रहा था। इन पंक्ति का अनुवाद ''वे जल के ऊपर *तेज़* हैं'' (देखें 9:26; होशे 10:7) हो सकता था। ऐसा लगता है कि वह उनकी मृत्यु की बात कर रहा था। NLT में कहा गया है, ''परन्तु वे पृथ्वी पर से वैसे ही जल्दी से आलोप हो जाते हैं जैसे झाग नदी में बह जाता है।''

''**उनके भाग को पृथ्वी के रहनेवाले कोसते हैं, और वे अपनी दाख की बारियों में लौटने नहीं पाते।**'' ''भाग'' (*chelqah, चेलक़ा*) का इस्तेमाल खेत के लिए हो सकता है और यह ''दाख की बारी'' के समानांतर है। खेत और दाख की बारियां अगली पीढ़ी को विरासत के रूप में दी जाती हैं। परन्तु यहां पर उनकी विरासत को ''कोसा'' गया और छोड़ दिया गया (देखें 20:28, 29)।

आयत 19. जैसे सूखे और धूप से हिम का जल सूख जाता है (6:15-17), **वैसे ही पापी लोग अधोलोक में सूख** भस्म हो **जाते हैं।** मृत्यु (पापियों का और धर्मियों का) भी अंत है।

आयत 20. *Rechem* (*रेचेम*) जिसका अनुवाद **माता** हुआ है मूलतया ''कोख'' है (NIV; NRSV; NJPSV)। इस शब्द का इस्तेमाल निंदा को बढ़ावा देने के लिए किया गया हो सकता है; वह स्त्री जिसकी कोख ने उस दुष्ट जन को कोमलता से सम्भाला अब उसकी कोई परवाह नहीं करेगी। आल्डन ने लिखा है, '''कोख' और 'कीड़ा' विस्तरण बन जाते हैं। ... जीवन के आरम्भ में कोख हमारा घर होता है; अंत के समय कीड़ा हमारा साथी होता है।''[11] कब्र में **कीड़े** दुष्ट मनुष्य के तन को तब तक खाते रहते हैं जब तक वह पूरी तरह से नष्ट नहीं हो जाता (17:14 पर टिप्पणियां देखें)।

बुराई करने वालों के द्वारा किए जाने वाले अन्याय का अंत होना पक्का है। उस वृक्ष के विपरीत जिसे ''काट डाला'' जाता है (14:7), उस **वृक्ष** को जो **कट जाता** है या ''उखाड़ डाला'' जाता है (19:10), भविष्य के लिए कोई आशा नहीं।

आयत 21. दुष्ट व्यक्ति **बांझ स्त्री** और **विधवा** सहित असहाय लोगों के साथ बुरा बर्ताव करता (24:3 पर टिप्पणियां देखें)।

आयतें 22, 23. ''बलात्कारियों को भी परमेश्वर अपनी शक्ति से खींच लेता है, जो

जीवित रहने की आशा नहीं रखता, वह भी फिर उठ बैठता है। वह उन्हें ऐसे बेखटके कर देता है, कि वे सम्भले रहते हैं; और उसकी कृपादृष्टि उनकी चाल पर लगी रहती है।'' इन आयतों को समझना कठिन है पर मुख्य विचार यह है कि हर प्रकार का जीवन परमेश्वर की सामर्थ और ईश्वरीय रक्षा से संचालित होता है। परमेश्वर की ओर इशारा करते हुए NASB में इन आयतों के कई सर्वनामों को बड़े अक्षरों में लिखा गया है। कई अन्य संस्करणों में आयत 22 के आरम्भ में ''परमेश्वर'' शब्द जोड़ा गया है (ASV; RSV; NEB; NIV; NKJV; NRSV; NJPSV; NCV; CEV; NLT)।

आयत 24. दुष्ट सफल होते हैं, पर थोड़े समय के लिए। इन लोगों जो **काटे जाते हैं** की तुलना **अनाज की बाल** से की जाती है। ''काटे जाते हैं'' के लिए क्रिया शब्द, *malal* (*मलल*), का अनुवाद ''मुर्झा जाते'' भी हो सकता है (14:2; भजन संहिता 37:2; 90:6)।

आयत 25. ''क्या यह सब सच नहीं! कौन मुझे झुठलाएगा? कौन मेरी बातें निकम्मी ठहराएगा?'' अय्यूब ने मित्रों के सामने चुनौती रखी। हेली ने देखा, ''उन मित्रों के विपरीत जिन्होंने परम्परा से लेकर बात की थी, अय्यूब ने अपनी राय जीवन के तथ्यों से दी। उसने अपने सुनने वालों को उसे गलत साबित करने की चुनौती का मुंह तोड़ जवाब देकर अपने भाषण को समाप्त किया।''[12]

प्रासंगिकता

बुराई करने पर उतारू लोग (अध्याय 24)

अध्याय 24 की पहली आयत में अय्यूब ने पूछा कि ऐसा क्यों लगता है कि दुष्ट लोग अपनी बुरी चालों से बच निकलते हैं: ''सर्वशक्तिमान ने समय क्यों नहीं ठहराया, और जो लोग उसका ज्ञान रखते हैं वे उसके दिन क्यों देखने नहीं पाते?'' परमेश्वर के ''समय'' और ''दिन'' उनके द्वारा दुष्टों के न्याय करने को कहा गया है। हम चकित हो सकते हैं कि परमेश्वर कई बार दुष्टों को फलने-फूलने क्यों देता है, उन्हें दण्ड नहीं देता, जबकि धर्मी लोगों को कष्ट और दुःख सहने पड़ते हैं। हम गीत गाते हैं,

> परखे और अज़माए जाने पर हम अक्सर हैरान होते
> ऐसा क्यों होता है सारा दिन,
> जबकि हमारे आसपास रहने वाले
> गलती के लिए कभी तंगी नहीं उठाते।[13]

परन्तु हम अय्यूब से बेहतर हैं क्योंकि नये नियम से हमें पता है कि सब लोगों को अंत में न्याय के लिए परमेश्वर के सामने आना पड़ेगा (2 कुरिन्थियों 5:10)। अपने बाकी के भाषण में अय्यूब ने बुराई करने वालों की खूबियों का वर्णन किया।

वे आम तौर पर निर्बल लोगों को अहेर बनाते हैं (24:2-12)। दुष्ट लोग आम तौर पर अपनी काली कमाई से अपने से कमज़ोर लोगों के साथ चालाकियां करते हैं। अपनी बात को समझाने के लिए अय्यूब ने उदाहरण दिए: ''कुछ लोग भूमि की सीमा को बढ़ाते, और भेड़

बकरियाँ छीनकर चराते हैं। वे अनाथों का गदहा हाँक ले जाते, और विधवा का बैल बन्धक रखते हैं'' (24:2, 3)। बुराई करने वाले लोग अपने खेत की सीमा को बढ़ाने के लिए छल से अपने पड़ोसियों की सीमा के पत्थरों को हटा देते हैं (देखें व्यवस्थाविवरण 19:14; 27:17)। इतना ही नहीं वे अपने पड़ोसियों की भेड़ों को चुराकर उन्हें खा जाते हैं। दुष्ट लोग अनाथों और विधवाओं का जिनके सिर पर पति या पिता का साया न होता हक्क खा जाते हैं। जिससे ये बेचारे लोग फटेहाल हो जाते, जिनके पास न पर्याप्त खाना, न कपड़ा और न रहने को होता है। उन्हें पेट भरने के लिए खाना ढूंढ़ने के लिए खेतों में बटोरना पड़ता है (24:4-8)। बुराई करने वालों का सबसे बड़ा अपराध अनाथों (पिताहीनों) को उनकी माताओं की छातियों से छीन लेना होता था। अंत में इन नवजात शिशुओं को बड़ी से बड़ी बोली लगाकर गुलाम किया जाता, और उनके लिए गुलाम बनने के सिवाय और कोई चारा नहीं होता था।

बुराई करने वाले आज भी पाए जाते हैं जो कमज़ोर लोगों को अपना शिकार बनाते हैं। बड़े बड़े नगरों में अनाथ और घरों से भागे हुए लोग सहारे और नशे की लत के कारण चंगुल में फंस जाते हैं जिससे निकल पाना उनके लिए कभी सम्भव नहीं होता। आम तौर पर बुज़ुर्ग लोग, विशेषकर विधवाएं जालसाज़ों का निशाना बनते हैं।

वे अंधेरे के लिबास में छिपते हैं (24:13-17)। अय्यूब ने उन बुराई करने वालों का वर्णन किया जो अंधेरे में अपनी दुष्टता के काम करते हैं: हत्या, व्यभिचार और चोरी। हत्या, व्यभिचार और चोरी के पापों की निंदा नये नियम के साथ-साथ दस आज्ञाओं में भी की गई है (निर्गमन 20:13-15), ऐसे पाप करने वाले लोग आम तौर पर रात के समय ऐसा करते हैं ताकि उनके बुरे काम दूसरों से छिपे रहें। पौलुस ने देखा कि ''जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:7)। जंगली पार्टियों जिनमें शराब और नशों का इस्तेमाल होता है आम तौर पर रात को ही होती हैं। इस तथ्य के कारण कि बाल-अपराध आम तौर पर रात को ही होते हैं कई अमेरिकी नगरों में रात के समय कर्फ़यू लगा दिया जाता है।

इफिसियों 5:7-14 में पौलुस ने ये जबर्दस्त बातें लिखीं:

> इसलिये तुम उनके सहभागी न हो। क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, अत: ज्योति की सन्तान के समान चलो (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है), और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है। अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न हो, वरन उन पर उलाहना दो। क्योंकि उनके गुप्त कामों की चर्चा भी लाज्ज की बात है। पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रगट करता है वह ज्योति है। इस कारण वह कहता है, ''हे सोनेवाले, जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी।''

उनका अंत विनाश है (24:18-25)। एक और जहां अय्यूब ने यह शिकायत की कि दुष्टों को हमेशा दण्ड नहीं मिलता (24:1), वहीं वह यह संकेत देता हुआ प्रतीत होता है कि यहां उन्हें दण्ड मिलेगा। NJPSV में इस पद्य को अय्यूब की तीव्र इच्छा के रूप में समझा गया है; उस अनुवाद में ''may'' के द्वारा कई पंक्तियों का प्रारम्भ किया गया है। शायद अय्यूब को

लगा कि यदि परमेश्वर सचमुच में दुष्टों को दण्ड देता तो उसने उसे भी दोषमुक्त कर देना था।

अय्यूब ने दुष्ट व्यक्ति के जीवन को थोड़े दिनों का बताया। वे ''नदी पर फैल जाने वाली झाग'' के जैसे हैं (24:18; NLT); वे जल्द मिट जाते हैं। जिस प्रकार से सूखा और गर्मी बर्फ को पिघला देते हैं और इसके जल को उड़ा देते हैं, वैसे ही अधोलोक दुष्ट लोगों को भस्म कर देगा (24:19)। उन्हें उनकी अपनी माताएं ही भुला देंगी और उनका ''टेड़ा काम वृक्ष के समान फट जाता है'' (24:20)।

परमेश्वर अंत में दुष्टों का न्याय करेगा। इस पृथ्वी पर रहते हुए हो सकता है कि उनका जीवन लम्बा, स्वास्थ्य और सुविधा से भरा हो; परन्तु अंत में सब खत्म हो जाएगा। प्रकाशितवाक्य के अन्तिम दृश्यों में इसे साफ़ साफ़ बताया गया है:

> पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों और व्यभिचारों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गन्धक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है (प्रकाशितवाक्य 21:8; देखें 21:27; 22:15)।

डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]एच. एच. रोअले ने कहा कि 24:18-24 सोपर के तीसरे भाषण को गलत जगह पर रखा गया है। एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 204, 210 में अन्य विद्वानों के विचारों पर उसकी चर्चा देखें। [2]अधिक जानकारी के लिए देखें *परिशिष्ट: भाषणों के तीसरे ''अधूरे'' दौर की समस्या,* पृष्ठ 186-87. [3]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 245. [4]जॉन ई. हार्टले, द *बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 346. [5]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 445. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 214. [7]हार्टले, 348. [8]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 173-74. [9]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 213. [10]हार्टले, 352; देखें एंडरसन, 214.

[11]आल्डन, 251. [12]हेली, 220. [13]डब्ल्यू. बी. स्टीवन्स, ''फार्दर अलॉन्ग,'' *सॉंग्स ऑफ़ फ़ेथ ऐंड प्रेज़,* संक. व सम्पा. आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)।